नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 इ-मेल: mgahvpro@gmail.com

वेबसाइट : www.hindivishwa.org

जयशंकर प्रसाद के साहित्य-चिंतन की व्यावर्तक विशेषताएँ पर प्रो. ओमप्रकाश सिंह का व्याख्यान

वर्धा दि. 30 जुलाई 2015: महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के साहित्य विद्यापीठ में हिंदी एवं तुलनात्मक विभाग द्वारा वरिष्ठ प्रोफेसर ओमप्रकाश सिंह का 'जयशंकर प्रसाद के साहित्य चिंतन की व्यावर्तक विशेषताएँ' विषय पर विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया। प्रो. सिंह ने प्रसाद के प्रारंभिक एवं पारिवारिक जीवन-प्रसंगों की विधिवत चर्चा करते हुए कहा कि वर्तमान परिदृश्य में आज प्रसाद की साहित्यिक रचनात्मकता समाजशास्त्रीय ढंग से समझने की जरूरत है। उन्होंने छायावादी स्तंभों का उल्लेख करते हुए बताया कि मुख्य रूप से देखा जाय तो प्रसाद और महादेवी वर्मा ही वास्तविक छायावादी कवि हैं। प्रसाद के दार्शनिक विचारों पर सर्वाधिक प्रभाव 'शैव दर्शन' के अंतर्गत आने वाले 'प्रत्यभिज्ञा दर्शन' का पड़ा है। 'कामायनी' में प्रयुक्त अनेक पारिभाषिक शब्द प्रत्यभिज्ञा दर्शन के ही शब्द हैं। प्रसाद जी की निपुणता यह रही कि उन्होंने दर्शन के नीरस एवं शुष्क विचारों को भाव एवं कल्पना के योग से सरस एवं सर्वजन सुलभ बना दिया है, परिणामतः कथा कहीं बोझिल नहीं हुई है। उन्होंने कहा कि देखा जाय तो प्रसाद के चिंतन की चरम परिणति 'कामायनी' है।

प्रो. सिंह ने प्रसाद के साहित्य चिंतनके बहाने प्रेमचंद, रामचन्द्र शुक्ल, लाला भगवानदीन, मैथिलीशरण गुप्त के कई संस्मरणों एवं रोचक प्रसंगों को भी साझा किया। उन्होंने कहा कि प्रसाद जिस प्रकार से एक बड़े कवि के रूप में जाने जाते हैं उससे कहीं ज्यादा वे एक नाटककार, उपन्यासकार, कहानीकार एवं निबंधकार के रूप में भी प्रतिष्ठित हैं।उन्होंने प्रसाद के कथा-साहित्य को महत्त्वपूर्ण बताते हुए कहा कि गौर करने योग्य बात है कि प्रसाद अपने कथा-साहित्य में वेदों, उपनिषदों की तरफ न जाकर जीवन के कटु यथार्थ से जूझते हैं। 'कंकाल' एवं 'इरावती' इसके सशक्त उदाहरण हैं। इनके नाटकों में भी यह बात बखूबी देखने को मिलती है। इनके नाटक सिर्फ ऐतिहासिकता के धरातल तक सीमित नहीं हैं वरन् वह मानव-जीवन की संघर्ष-गाथा के महत्त्वपूर्ण दस्तावेज़ हैं।

प्रो. ओ. पी. सिंह इस बात पर जोर दिया कि प्रसाद की रचनाओं में उनकी सांस्कृतिक दृष्टि अभिव्यक्त हुई है। प्रसाद की नाट्य-कृतियाँ पौराणिक युग से लेकर हर्षवर्धन युग तक के भारतीय इतिहास के गौरवमयी कालखंड पर आधृत हैं। प्रसाद का जीवन बहुत ही विषम परिस्थितियों एवं संघर्षों में व्यतीत हुआ। एक तरफ उनके जीवन की हलचलें दूसरी तरफ उनकी साहित्यिक सर्जना दोनों एक साथ चल रही थी। दोनों में काफी साम्यता है। 'आँसू' इसका सशक्त उदाहरण है। प्रो. सिंह ने प्रसाद की सम्पूर्ण साहित्यिक यात्रा की तरफ बड़ी बारीकी के साथ संकेत करते हुए एक महत्त्वपूर्ण उद्दरण की तरफ भी संकेत किया। वह यह कि कोई भी रचनाकार जब इतिहास के किसी भी कालखंड को अपनी रचना का विषय बनाता है तो उसके सामने उस कालखंड का चित्रण महत्त्वपूर्ण नहीं होता बल्कि महत्त्वपूर्ण होता है अपना वर्तमान चित्रित करना। इन संदर्भों में तो प्रसाद जी को महारथ हासिल है।

चर्चा में छात्रों एवं शोधार्थियों द्वारा कई महत्त्वपूर्ण सवाल भी उठाए गए जिस पर विधिवत चर्चा हुई। इस कार्यक्रम में विभागीय छात्रों, शोधार्थियों एवं शिक्षकों के अलावा विश्वविद्यालय के अन्य सदस्य भी मौजूद थे। सत्र का संचालन हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग के अध्यक्ष प्रो. कृष्ण कुमार सिंह नेकिया।